रॉबर्ट वानॉय, व्यवस्थाविवरण, व्याख्यान 12

© 2011 डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

व्यवस्थाविवरण 12 की व्याख्या, पोहल का हलवर्डा में शामिल होना

1. वाक्यांश "वह स्थान जिसे प्रभु आपका परमेश्वर चुनेगा": हलवर्दा

अब, आइए वापस वहीं चलें जहां हमने छोड़ा था: उस वाक्यांश के शब्द "वह स्थान जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा चुनेगा।" ए. होल्वर्डा ने निष्कर्ष निकाला कि सवाल "एक या अधिक" का नहीं है, बल्कि यह है कि क्या स्थान का चयन मनमाने मानवीय तरीकों से किया गया है, या क्या स्थान का चयन दैवीय पसंद से किया गया है। दूसरे शब्दों में, वह जो करता है वह क्रिया, बहार, "वह स्थान जिसे प्रभु चुनेगा" पर जोर देता है। मुद्दा इतना नहीं है कि यह उनमें से एक है या अधिक, बल्कि यह है कि यह प्रभु की पसंद का स्थान है, यह केवल एक मनमाना विकल्प नहीं है। कुछ अन्य कारक भी हैं जिनसे होल्वर्डा अपनी स्थिति का समर्थन करने की अपील करता है । वह कहते हैं, "यदि व्यवस्थाविवरण 12 कहता है कि सभी भेंटें केवल एक ही स्थान पर लायी जानी हैं, तो सोचिए कि व्यावहारिक रूप से उन लोगों के लिए इसका क्या मतलब है, जो उदाहरण के लिए, दान में, उत्तर में रहते थे, वह लगभग नब्बे मील की दूरी पर है यरूशलेम से।" यह वैसा ही होगा जैसे कोई परिवार अब बलिदान देने के लिए फिलाडेल्फिया से फ्लोरिडा, या कुछ और की यात्रा कर रहा हो। अब, आप उस पर चलेंगे, और इसमें आपको थोड़ा समय लगेगा। उनका कहना है कि इसका मतलब कम से कम एक सप्ताह की अनुपस्थिति होगी।

एक। हलवर्डा के एकाधिक वेदी दृष्टिकोण के निहितार्थ

मैं जो करना चाहता हूं वह खत्म करना है जो होल्वर्डा तर्क दे रहा है, फिर मैं वास्तविक बलिदान के बजाय मौद्रिक साधनों को ले जाने के मुद्दे पर वापस आऊंगा क्योंकि यह परिवहन के लिए अधिक व्यवहार्य है। फिर मैं वापस जाना चाहता हूं और व्यवस्थाविवरण 12 में विचार के पूरे प्रवाह को करीब से देखना चाहता हूं। मैं सुझाव देना चाहता हूं, एक हालिया अध्ययन के आधार पर, होलवर्डा के दृष्टिकोण में एक संशोधन जो उस पर लागू होगा।

लेकिन जरा यहां व्यावहारिक निहितार्थों के बारे में सोचें। ऐसे बहुत से अवसर हैं जब एक इस्राएली को बलिदान लाना होता था। क्या उसे हर बार यरूशलेम जाना होगा? लेवियों के लिए इसका क्या अर्थ होगा? उन्हें इन लोगों के साथ बलिदान स्थल तक जाना था । वे हर समय सड़क पर रहेंगे; वे सुदूर स्थानों तक यात्रा करने के बजाय यरूशलेम में ही रुक सकते हैं। इसलिए ऐसा नहीं लगता कि व्यवस्थाविवरण 12 को केवल एक केंद्रीय वेदी, बलिदान के एक वैध स्थान की आवश्यकता है। ऐसा नहीं लगता कि यह कोई बहुत व्यावहारिक बात है; इसे वास्तव में कभी भी क्रियान्वित नहीं किया जा सका।

आप जानते हैं, 2 शमूएल 24 से वह स्थान जहां मंदिर चुना गया था वह अरौना के खलिहान पर था जहां कुछ संकेत प्रतीत होते हैं कि यहां एक जगह थी जिसे भगवान अलग करेंगे। लेकिन आप कह सकते हैं कि बेथेल की वेदी, जहां भगवान ने याकूब को दर्शन दिए थे, यहां भगवान की अभिव्यक्ति थी जो वैधता, या मंजूरी देती है, क्योंकि उसका नाम वहां प्रकट हुआ था, ताकि वहां भी उसके लिए एक वेदी बनाई जा सके। निःसंदेह वहाँ अन्य स्थान भी थे, शायद उनमें से कुछ दर्ज थे, शायद उनमें से कुछ दर्ज नहीं थे, जहाँ भगवान प्रकट हुए होंगे और जिसने वेदी बनाने का वैध अधिकार दिया होगा। यह सिर्फ एक वेदी का निर्माण नहीं है जहां आप ऐसा महसूस करते हैं, बल्कि एक ऐसी जगह है जहां किसी तरह से कुछ दैवीय मंजूरी थी। बेशक, यह कुछ हद तक अस्पष्ट है कि यह सामान्य रूप से कैसे काम करेगा तो चलिए थोड़ा और आगे बढ़ते हैं।

होल्वर्डा का निष्कर्ष यह है कि इज़राइल के पास ऐसा कोई कानून नहीं था जो पंथ को केवल एक ही स्थान पर बांधता हो, लेकिन इज़राइल एक ऐसे कानून के तहत रहता था जो एक केंद्रीय अभयारण्य के बगल में स्थानीय वेदियों का प्रावधान करता था। एक केंद्रीय अभयारण्य, एकमात्र अभयारण्य के अर्थ में नहीं, बल्कि स्थान की प्रधानता, आप कह सकते हैं, मंदिर में वेदी को दिया जाएगा, या पहले तम्बू में वेदी को दिया जाएगा, लेकिन यह वैध वेदियों का बहिष्कार नहीं है अन्यत्र. इसलिए जिस स्थान पर वेदी बनाई जानी थी उसे विनियमित किया गया था। यहोवा इसे किसी प्रकार से निर्दिष्ट करेगा। जिस सामग्री से वेदी का निर्माण किया जाना था, और फिर निश्चित रूप से जो चढ़ावा लाया जाना था और उन्हें कैसे लाया जाना था, यह सब पेंटाट्यूकल विधान में विनियमित किया गया था। इसलिए इनमें से प्रत्येक क्षेत्र या मामले में मनमानी और मानवीय युक्ति

को बाहर रखा गया है: स्थान, सामग्री और प्रसाद के प्रकार। यह सब विनियमित था, और यहोवा ने इसे लिखा था, लेकिन परमेश्वर ने अपने लोगों को प्रलोभन से बचाने के लिए कई वेदियाँ प्रदान कीं। कनानियों के पास हर जगह वेदियाँ थीं। इस्राएली कनानियों के बीच में रह रहे थे, और उनके पास अपनी वेदियाँ थीं, और यदि इज़राइल के पास वेदियाँ नहीं होतीं, तो यह उन्हें आसानी से प्रलोभन में ले जा सकता था। परन्तु उन्हें उससे दूर रखने के लिए, उन्हें अपने साथ संगति में रखने के लिए, उसने भेंट के लिए एक स्थान प्रदान किया जो सुलभ हो। तो आम तौर पर होलवर्डा की स्थिति यही है ।

2. व्यवस्थाविवरण 2:1 की व्याख्या

अब मैं जो करना चाहता हूं वह व्यवस्थाविवरण 12 पर वापस जाना है और केवल उस एक वाक्यांश के बजाय अध्याय को देखना है। आइए अध्याय में नीचे जाएँ और देखें कि यह कैसे प्रवाहित होता है। मैं बस इस पर कुछ टिप्पणियाँ करूँगा, लगभग फिर से होल्वर्डा की व्याख्या का अनुसरण करते हुए। यदि आपके पास कोई हिब्रू पाठ है, तो आप उसे देखना चाहेंगे। व्यवस्थाविवरण 12:1 में लिखा है, "जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें अधिक्कारने में देता है उस में जब तक तुम पृथ्वी पर जीवित रहो तब तक तुम इन्हीं विधियों और नियमों का पालन करते रहना।" ये क़ानून और अध्यादेश हैं. यदि आप पाठ को देखें तो आपको "क़ानून और अध्यादेश" दिखाई देंगे। होल्वर्डा उन शब्दों को मूल रूप से पर्यायवाची, हुक्किम और मिशपतिम के रूप में लेता है । उनका कहना है कि जो लोग उनके बीच अंतर करने की कोशिश करते हैं, वे कहते हैं कि या तो हुक्किम सिद्धांतों को संदर्भित करता है और मिशपतिम विशिष्ट नियमों को संदर्भित करता है, या हुक्किम धार्मिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं और मिशपतिम नागरिक कानून और आपराधिक आवश्यकताओं को संदर्भित करता है।

उनका मानना है कि अंतर बनाए रखना कठिन है। इसलिए वह इन्हें मूलतः पर्यायवाची के रूप में लेता है। वह अध्याय छह, श्लोक एक की ओर इशारा करते हैं, जहां दिलचस्प बात यह है कि, उन दो शब्दों के पहले हमित्ज़्वा लगा हुआ है। अब मैं किंग जेम्स से पढ़ रहा हूं, जो वास्तव में शाब्दिक अनुवाद नहीं है। राजा जेम्स कहते हैं, "अब ये आज्ञाएँ, क़ानून और अध्यादेश हैं।" किंग

जेम्स के पास "आज्ञाएँ" बहुवचन हैं। यदि आप हिब्रू पाठ को देखें, तो यह एकवचन है: "अब यह आज्ञा [मित्ज़्वा], क़ानून और अध्यादेश हैं।" अब होल्वर्डा मिट्ज्वा को मूलभूत आवश्यकता या मूल आज्ञा के रूप में लेता है, अर्थात्, पहली आज्ञा: कोई अन्य ईश्वर नहीं है। यही मूल आज्ञा है. आपके पास वह मिट्ज्वा है, कोई अन्य देवता नहीं, मूल आज्ञा, फिर आपके पास मूल आज्ञा के आगे कार्यान्वयन के रूप में हुक्किम और मिशपतिम है। ताकि वह महसूस कर सके कि अध्याय 6-11 ज्यादातर मिट्ज्वा, आज्ञा, केवल प्रभु के प्रति वफादारी से संबंधित है। इसका वर्णन अध्याय 6-11 में किया गया है। और अब, व्यवस्थाविवरण 12:1 में, आप हुक्किम और मिश्पतिम पर विचार करना शुरू करते हैं , और अधिक विस्तृत नियमों में इसे आगे बढ़ाते हैं।

3. व्यवस्थाविवरण 12:2-4 की व्याख्या

दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 12 की शुरुआत पंथ पर विचार से होती है। और यह वह है, जो दूसरी आज्ञा से संबंधित है: “तू उन्हें दण्डवत् न करना, और न उनकी सेवा करना; तुम कोई खोदी हुई मूर्ति नहीं बनाओगे," इत्यादि। तो व्यवस्थाविवरण 12:2 फिर कहता है, "तू उन सब स्थानों को पूरी तरह से नष्ट कर देगा जिनमें वे राष्ट्र, जिनके अधिकारी तुम होंगे, ऊँचे पहाड़ों पर, टीलों पर, और सब हरे वृक्षों के तले अपने देवताओं की उपासना करते होंगे।" तुम उन सभी स्थानों को पूरी तरह से नष्ट कर दोगे जहाँ कनानी अपने देवताओं की पूजा करते हैं। उन्हें नष्ट किया जाना है.

आयत 3 कहती है कि “तू उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ देना, उनकी मूरतों को आग में जला देना; तुम उनके देवताओं की खुदी हुई मूरतों को काट डालोगे, और उनके नाम उस स्थान से मिटा डालोगे।” और फिर श्लोक चार कहता है, "तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा के साथ ऐसा नहीं करना चाहिए।" यदि आप हिब्रू पाठ को देखें, "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए ," " ऐसा" या "इस प्रकार।" "ऐसा" या "इस प्रकार" का तात्पर्य किससे है? यह कनानियों की मूर्तियों और अन्यजातियों के पूजास्थानों की रीति पर यहोवा की आराधना के लिये होना चाहिए; अन्यजातियों के पवित्रस्थानों में तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा के लिये ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि इज़राइल अन्यजातियों के पूजा स्थलों पर कब्ज़ा कर लेता है, तो प्रभु की पूजा और इन

अन्यजातियों के देवताओं की पूजा के बीच का तीव्र विरोध मिट जाता है। इसलिए अध्याय 6 से 11 में होलवर्डा का मूल विचार यह है कि भगवान की सेवा करना केवल छंद चार और पांच में व्यक्त किया गया है, और दूसरी आज्ञा के क्षेत्र में काम किया गया है।

इसलिए, पूजा स्थलों के संबंध में मूल धारणा, जो आप वेलहाउज़ेन और उनके अनुयायियों में पाते हैं, मौलिक रूप से गलत है। वेलहाउज़ेन क्या कहता है? वेलहाउज़ेन का कहना है कि इज़राइल ने कनानी ऊंचे स्थानों पर कब्ज़ा कर लिया। याद रखें, इज़राइली पूजा कनानी बुतपरस्तवाद से विकसित हुई और उन्होंने कनानी उच्च स्थानों पर कब्ज़ा कर लिया, और केवल बाद में, भविष्यवाणी के प्रभाव में, आपने इसका विरोध किया। और ये जो कह रहा है वो उससे बिल्कुल विपरीत है. जब तुम कनान देश में आओगे, तो तुम्हें उन सभी स्थानों को मिटा देना होगा। और तुम्हें केवल उसी स्थान पर दण्डवत करना जो मैं चुनूंगा। अब, निस्संदेह, यह सच है कि इज़राइल ने हमेशा उस आदेश को गंभीरता से नहीं लिया, फिर भी आदेश मौजूद था। उन्हें यही करना था, भले ही उन्होंने हमेशा इसका पालन नहीं किया। तो आप न्यायियों की पुस्तक में ही पाएंगे कि वे अन्यजातियों के ऊंचे स्थानों पर पूजा कर रहे थे, और इसके लिए न्यायियों 2:1-5 में उनकी निंदा की गई थी। लेकिन यह वेलहाउज़ेन की थीसिस से काफी अलग है।

4. व्यवस्थाविवरण 12:5 की व्याख्या

तो पद पाँच, "परन्तु जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब गोत्रों में से अपना नाम रखने के लिये चुन ले, अर्थात उसके निवास के नीचे उसी स्थान की खोज करना, और वहीं आ जाना।" श्लोक चार के बिल्कुल विपरीत, श्लोक पांच हिब्रू में की'इम से शुरू होता है । "लेकिन, उस स्थान तक," और यह बिलकुल उसी अभिव्यक्ति के समान है जिसे हमने श्लोक चौदह में देखा था। हम उस पर बाद में वापस आएंगे। लेकिन यह बुतपरस्त स्थानों के विपरीत है। जो स्थान यहोवा चुन लेगा, वहीं तुम्हें जाना है।

5. व्यवस्थाविवरण 12:6 की व्याख्या

छंद छह, "और वहां तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, अपना दशमांश, अपने हाथ से उठाई हुई भेंट, अपनी मन्नतें, अपनी स्वेच्छाबलि, अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठों को वहीं ले आना।" इसलिए प्रसाद को श्लोक पाँच में निर्दिष्ट स्थान पर लाया जाना चाहिए। आपके पास प्रसाद की इन श्रेणियों का उल्लेख है जिन्हें उस स्थान पर लाया जाना है। फिर पद सात कहता है, "वहां तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने भोजन करना। जिस जिस काम में तू अपना हाथ लगाए उस से तू और तेरे सारे घराने समेत, जिस से तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आशीष दी हो, आनन्द करना। श्लोक छह का प्रसाद श्लोक पांच के स्थान पर खाया जाना चाहिए। यह सब एक साथ बहता है। वह यहोवा के साम्हने किया जाए; तुम यहोवा के साम्हने भोजन करना। भगवान कुछ अर्थों में उस स्थान पर मौजूद हैं।

"और वहां तुम आनन्द मनाओगे।" इस्राएलियों के बलिदान कनानियों की तुलना में अवधारणा में भिन्न थे। कनानी अनुष्ठान में, बलिदान का एक जादुई चरित्र था। आप प्रजनन क्षमता सुनिश्चित करने के लिए बलिदान देकर प्रयास करते हैं। इस्राएलियों की समझ में भूमि की उर्वरता प्रभु की ओर से एक उपहार है, जैसा कि व्यवस्थाविवरण 8 कहता है। पंथ, या बलिदान, जादुई नहीं हैं; वे इसका उत्पादन नहीं करते. परन्तु बलिदान जो पहले ही प्राप्त हो चुका है उसके लिए धन्यवाद और आनन्द की अभिव्यक्ति के रूप में दिया जाना चाहिए। तब उन से कहा गया, कि जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें आशीष दे, तब तुम यहोवा के साम्हने भोजन करना, और जिस जिस काम में तुम अपना हाथ लगाओ उस में तुम और तुम्हारे घराने समेत आनन्द करना।

6. व्यवस्थाविवरण 12:8 की व्याख्या

एनआईवी में श्लोक आठ कहता है, "आपको वैसा नहीं करना है जैसा हम आज यहां करते हैं, हर कोई जैसा उचित समझे।" अब, जाहिरा तौर पर, यह कहा गया है कि जब इज़राइल कनान में प्रवेश करेगा, तो उसे वर्तमान अभ्यास से बदलना होगा। "आपको वैसा नहीं करना है जैसा हम आज यहां करते हैं, हर कोई जैसा उचित समझे।" और ऐसा प्रतीत होता है कि उस परिवर्तन में बलिदान के स्थान का सम्मान है। अब सवाल यह है कि मूसा के मन में ऐसी कौन सी स्थिति है

जिसे बदलना है? वह स्थिति को एक प्रकार से अनियमित बताते हैं; हर कोई वही करता है जो उसकी नज़र में सही है -“ हर कोई वही करता है जो उसे ठीक लगता है।”

अब, कुछ लोग इसे जंगल की अवधि के संदर्भ के रूप में समझते हैं और कहते हैं कि जंगल में भटकने के दौरान यही स्थिति थी; उस पूरे जंगल काल के दौरान हर किसी ने वही किया जो उसकी नज़र में सही था। होल्वर्डा ने इसे अस्वीकार कर दिया। होल्वर्डा का कहना है कि यदि आप हिब्रू पाठ में 12:8 को देखें, तो इसका शाब्दिक अर्थ है "आप ऐसा नहीं करेंगे, सभी के अनुसार, आशेर , जो अनकनु , हम हयोम कर रहे हैं , आज यहां।" अनकनु , "हम", होल्वर्डा का कहना है कि अनकनु वर्तमान जीवित पीढ़ी की बात करता है, "हम" क्या कर रहे हैं। ' ओसिम , हम' ओसिम , "कर रहे हैं" संदर्भित प्रथाओं के वर्तमान निरंतर चरित्र को इंगित करता है। जिस समय वह बोल रहे हैं उस समय कुछ चल रहा है। पोह , इसे स्थानीयकृत करता है ; यह जंगल के समय का संदर्भ नहीं है, बल्कि यहां और अभी का संदर्भ है, और हयोम इसे और अधिक विशिष्ट बनाता है: आज, यह कहता है। तो वह जो कहते हैं, वह यह है कि जंगल की अवधि के दौरान, उन्हें लगता है कि नियमित रूप से संगठित, सांस्कृतिक अभ्यास का पालन करना संभव था।

क्यों? इजराइल को दुश्मनों से खतरा नहीं था. वे जंगल में भटकते फिरे हैं; केवल कुछ असाधारण मामलों में ही उन्हें शत्रुओं द्वारा धमकी दी गई थी । लेकिन वर्तमान स्थिति में जब वे मोआब की भूमि, ट्रांस-जॉर्डन क्षेत्र में आए, तो वे युद्ध की स्थिति में प्रवेश कर चुके थे। उन्होंने बाशान के राजा ओग और वहाँ के पूर्वी राजाओं सीहोन से युद्ध किया।

7. व्यवस्थाविवरण 12:10 की व्याख्या

आप श्लोक 10 को देखें और यह कहता है, “परन्तु तू यरदन पार करके उस देश में बसेगा जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे निज भाग करके दिया है, और वह तुझे तेरे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम देगा, जिस से तू उसमें बसा रहेगा।” सुरक्षा।" अब वे विश्राम में नहीं थे; वे व्यवधान की इस स्थिति में थे। तो उस स्थिति में निर्गमन 20:24 में वर्णित नियम से विचलन था । निर्गमन 20:24 में कहा गया है, "तू केवल उसी स्थान पर बलिदान करना जहां मैं तेरे पास आता हूं।" और यहाँ, आप देखते हैं, आपको वैसा नहीं करना है जैसा आप आज यहाँ कर रहे हैं: हर कोई जैसा वह

उचित समझता है, हर कोई वही कर रहा है जो उसकी नज़र में सही है, कहीं भी सबसे अधिक त्याग करना। इसलिए उन्हें लगता है कि अशांति का दौर तब शुरू हुआ जब इज़राइल ने ट्रांस-जॉर्डन की विजय में सीहोन और ओग से लड़ाई की, और यही वर्तमान अभ्यास का कारण था। युद्ध की स्थिति ने सामान्य व्यवस्था को इतना बाधित कर दिया कि इससे बलिदान स्थलों के संबंध में मनमानी होने लगी और लोग कहीं भी बलिदान कर रहे थे। मूसा ने परिस्थितियों के कारण इसे माफ कर दिया।

लेकिन वह जो कह रहा है वह यह है कि जब आप इस भूमि पर आएंगे तो यह बदल जाएगा; तो फिर आप वैसा न करें जैसा आप आज यहां कर रहे हैं, बस कहीं भी बलिदान दे रहे हैं। "आपको वैसा नहीं करना है जैसा हम आज यहां करते हैं, हर कोई जैसा उचित समझे।" श्लोक 9, "क्योंकि तुम अब तक उस विश्रामस्थान और उस मीरास तक नहीं पहुंचे हो जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें देता है।" मौजूदा हालात का बहाना बताया गया है. वे अभी तक उस विश्राम स्थल पर नहीं पहुँचे हैं।

निःसंदेह, यहां आपको वह प्रश्न मिलता है जिस पर हमने पहले चर्चा की थी: वे उस विश्राम स्थल पर कब पहुंचेंगे? क्या यह दाऊद के समय तक नहीं है? मुझे लगता है कि यह बेहतर है क्योंकि होल्वर्डा ने विजय के तुरंत बाद यहोशू के समय में ऐसा करने का सुझाव दिया है जैसा कि यहोशू 21:42, और 22:4 में पाया गया है। मुझे लगता है कि श्लोक 10 इस बात की पुष्टि करता है: "तुम यरदन पार करोगे, उस देश में बसोगे जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें निज भाग करके दिया है, और वह तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम देगा, जिस से तुम सुरक्षित रहोगे।" बाकी सब तब शुरू होता है जब विजय समाप्त हो जाती है।

8. व्यवस्थाविवरण 12:11-14 की व्याख्या

फिर पद 11 कहता है, "तब उस स्थान को जो तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम के लिथे निवास के लिथे चुनेगा, वहां तुझे वह सब कुछ लाना होगा जो मैं तुझे आज्ञा देता हूं: अपने होमबलि और बलिदान, अपने दशमांश और विशेष उपहार, और सभी उत्तम संपत्तियां।" तुमने यहोवा की मन्नत मानी है।" जब विजय के युद्ध समाप्त हो जाएं, जिसके कारण बलिदान के स्थान के संबंध में

मनमानी हुई है, तब उस आदेश को गंभीरता से लिया जाना चाहिए: तुम्हें केवल उसी स्थान पर बलिदान करना चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा। श्लोक 12 काफी हद तक श्लोक 7 से मेल खाता है: "और वहां तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियां, दास-दासियां, और तुम्हारे नगरों के लेवीय, जिनके पास अपनी कोई भूमि या निज भाग नहीं है, अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने आनन्द करो।" श्लोक 13, "सावधान रहो कि तुम अपनी होमबलि कहीं भी न चढ़ाओ।" जगह की बात पर फिर जोर दिया गया है. और मुझे लगता है कि यहां आप थोड़ा और संकेत देख सकते हैं कि श्लोक 8 की मनमानी किस ओर इशारा कर रही थी: "आपको ऐसा नहीं करना है," श्लोक 8 में, "जैसा कि हम आज यहां करते हैं, हर कोई जैसा वह उचित समझता है।" श्लोक 13 इंगित करता है कि वह क्या है। "सावधान रहो कि अपनी होमबलि कहीं भी, जहाँ चाहो, जहाँ उचित समझो, बलि न करो।" वे वहां जो कर रहे थे, वह प्रसाद लाने के लिए अस्थिर परिस्थितियों में मिली किसी भी वेदी का उपयोग कर रहे थे और वास्तव में निर्गमन 20 की वेदी कानून का पालन नहीं किया जा रहा था।

फिर श्लोक 14 का निष्कर्ष है: "उन्हें केवल उसी स्थान पर चढ़ाओ जिसे प्रभु तुम्हारे गोत्रों में से किसी एक में चुनेंगे, और वहां जो कुछ मैं तुम्हें आदेश देता हूं उसका पालन करना।" वर्तमान मनमानी के विपरीत, इज़राइल को बाद में बलिदान के स्थान के संबंध में निर्धारित निर्देशों का पालन करना होगा।

9. व्यवस्थाविवरण 12:18-26 की व्याख्या

अब, यदि आप संक्षेप में वापस जाते हैं, तो आपके पास ये वाक्यांश हैं जो अध्याय में आते हैं। मैंने यहां एक क्रम में व्यवस्था की है जो सबसे पहले सबसे सरल अभिव्यक्ति से शुरू होती है, श्लोक 18 से 26 में, आपको वह अभिव्यक्ति मिलती है जो सबसे सरल रूप है। आप इसे 18 और 26 में पाते हैं: उस वाक्यांश में एक बात जोर देकर कही गई है, स्थान का चुनाव प्रभु की पसंद पर निर्भर है: "उस स्थान में जिसे प्रभु चुनेंगे।" तो मनमानी के खिलाफ, यह जगह का एक विकल्प है; यह वह स्थान है जिसे यहोवा चुनेगा । जब आप पद 11 पर जाते हैं, तो वहां एक अतिरिक्त तत्व होता है; वहां तुम्हें वह स्थान मिलेगा जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपना नाम रखने के लिये चुनेगा;

ताकि उसका नाम वहां बस सके। तो उस अतिरिक्त अभिव्यक्ति का विचार यह है कि ऐसे स्थान, बलिदान के स्थान और भगवान और उनके आत्म-प्रकटीकरण के बीच एक विशेष संबंध है। ईश्वर उस बलिदान स्थान को आत्म-प्रकटीकरण का स्थान बनाता है; यह स्वयं की अभिव्यक्ति का स्थान है। अब कुछ लोग कहते हैं कि यहोवा का नाम केवल एक ही स्थान पर रह सकता है; होल्वर्डा उसका मुकाबला करेगा। ऐसा कोई कारण नहीं है कि प्रभु अपना नाम एक से अधिक स्थानों पर न रख सके। मैं उस पर बाद में वापस आना चाहता हूं, लेकिन फिलहाल इसे ऐसे ही रहने दें।

श्लोक 21 में आपको एक और अतिरिक्त तत्व मिलता है। "वह स्थान जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा," श्लोक 11 और 21 वही हैं। चौदह में आपको अतिरिक्त अभिव्यक्ति मिलती है "अपने गोत्रों में से एक में," - " वह स्थान जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे गोत्रों में से एक में चुनेगा।" श्लोक 21 वास्तव में 11 के समान है। हम पहले ही इस पर चर्चा कर चुके हैं। यह "आपकी किसी भी जनजाति में" हो सकता है, जरूरी नहीं कि "आपकी किसी जनजाति में ही हो।" फिर अंतिम अभिव्यक्ति, जो श्लोक 5 में है, आपके पास "वह स्थान है जिसे आपका परमेश्वर यहोवा आपके सभी गोत्रों में से अपना नाम निवास करने के लिए चुन लेगा।" वहां आपको सभी वाक्यांश एक साथ मिल जाते हैं; यह व्यवस्थाविवरण 12:5 में है।

2. 1 राजा 8:16 से लिंक; 11:32

अब कुछ लोगों ने इसे यरूशलेम के संबंध में 1 राजा 8:16 की अभिव्यक्ति से जोड़ने का प्रयास किया है। 1 राजा 8:16, विशेष रूप से श्लोक 5 से जुड़ा हुआ है क्योंकि 8:16 कहता है, "जिस दिन से मैं अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र से निकाल लाया, उस दिन से मैं ने इस्राएल के किसी गोत्र के किसी नगर को मन्दिर बनाने के लिये नहीं चुना ताकि मेरी नाम हो सकता है, लेकिन मैंने अपनी प्रजा इस्राएल पर शासन करने के लिए दाऊद को चुना है।" "मैं ने कोई नगर न चुना, कि वहां अपना नाम बसाऊं" (1 राजा 8:16)। कई अन्य संदर्भ भी हैं, जैसे 1 राजाओं के 11:32, "परन्तु मेरे दास दाऊद के लिये, और यरूशलेम नगर के लिये, जिसे मैं ने इस्राएल के सब गोत्रों में से चुन लिया है, एक स्थान तुझे मिलेगा; इस्राएल के सब गोत्रों में से उसका एक गोत्र होगा। अब होल्वर्डा ने इस पर जो प्रतिक्रिया दी है वह यह है कि उन सभी ग्रंथों में हम्माकॉम शब्द का प्रयोग

नहीं होता है, यह जगह नहीं है, यह शहर है। इसलिए उन्हें लगता है कि वहां एक अंतर है, ताकि वे ग्रंथ बलिदान के स्थान की बात न करें, बल्कि एक विशिष्ट भौगोलिक स्थान की बात करें: शहर। इसलिए उनका मानना है कि इसके लिए केंद्रीकरण की भी आवश्यकता नहीं है।

अब, हम यहां तेजी से समय बर्बाद कर रहे हैं, लेकिन यह मूल रूप से होल्वर्डा की व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 की व्याख्या है। मुझे लगता है कि होल्वर्डा ने वास्तव में इस मुद्दे के महत्व को इंगित करने और फिर व्यवस्थाविवरण 12 को पढ़ने का एक तरीका सुझाने के लिए इंजील समुदाय की सेवा की है। बाइबिल सामग्री को बहुत बेहतर परिप्रेक्ष्य में रखता है।

3. पोहल का दृष्टिकोण: राष्ट्रीय केंद्रीय अभयारण्य और स्थानीय वेदियाँ

हालाँकि, एक और हालिया अध्ययन हुआ है, एक बहुत विस्तृत अध्ययन, और मैंने इसे आपकी ग्रंथ सूची में डाल दिया है। फिर से, यह एक डच विद्वान है, और इसका अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया गया है, लेकिन यदि आप पेज छह को देखें, तीसरी प्रविष्टि, एमजे पोहल, हेट आर्किमिडीज पुंट वान पेंटाटेच क्रिटिक , द आर्किमिडीज प्वाइंट ऑफ पेंटाटेट्यूचल क्रिटिसिज्म, 1988। यही वह खंड है, और यह इस संपूर्ण केंद्रीकरण मुद्दे का पुस्तक-लंबा उपचार है। यह अभी प्रकाशित हुआ है. वह वास्तव में महसूस करता है कि वह होलवर्डा के दृष्टिकोण को एक कदम आगे बढ़ा रहा है। मैंने अभी आपके साथ जो कुछ भी कहा है, उसके बारे में उनका निष्कर्ष यह है कि उन्हें लगता है कि व्यवस्थाविवरण 12 को इस तरह से पढ़ना संभव है। लेकिन उनका मानना है कि यह थोड़ा ज़बरदस्ती है. फिर वह जो करता है वह एक अंतर बनाता है जिससे हाल ही में इस पुस्तक को पढ़ने के बाद, मैं सहमत होने को इच्छुक हूं। मुझे लगता है कि उनका दृष्टिकोण होलवर्डा की तुलना में सुधार देता है ।

वह होल्वर्डा की व्याख्या की संभावना से इनकार नहीं करता है , लेकिन वह यह निष्कर्ष निकालता है कि पढ़ने को बहुत मजबूर किया जाता है, और व्यवस्थाविवरण 12 जो करता है वह केवल एक केंद्रीय अभयारण्य की अनुमति देता है, लेकिन वेदियों की बहुलता के मुद्दे को संबोधित नहीं करता है। दूसरे शब्दों में, वह क्या करता है, जब वह अध्याय 12 में जाता है और आप पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, छंद 2 और 3, "आप स्थानों को पूरी तरह से नष्ट कर देंगे," वह वहां "स्थान"

को समझता है, जो बहुवचन है, वह इसे समझता है कनानियों के केंद्रीय अभयारण्यों का एक संदर्भ। तब उसे लगता है कि अध्याय में जो कुछ बहता है वह एक विरोधाभास है, और यह विरोधाभास कनानी प्रथाओं के साथ है। तुम्हें उनके पवित्रस्थानों को नष्ट करना होगा, और फिर तुम्हें अपनी भेंटें उस केंद्रीय पवित्रस्थान में ले जाना होगा जिसे यहोवा उनके स्थान पर चुनेगा। वह छंद 8 पढ़ता है और होल्वर्डा की तरह ही उसका अनुसरण करता है, लेकिन कथन को केवल वेदियों के स्थान के बजाय केंद्रीय अभयारण्य के स्थान से जोड़ता है। इसलिए ट्रांस-जॉर्डन में युद्धों के समय की उलझन भरी अवधि में , जहां पंथ सामान्य नियमों के अनुसार काम नहीं कर सकता था, उस केंद्रीय अभयारण्य को मनमाने स्थानों पर रखा जा रहा था। वह इसे इसी तरह समझता है।

उनका निष्कर्ष यह है कि अध्याय 12 केंद्रीय अभयारण्य के मुद्दे को संबोधित करता है। अधिकांश व्याख्याताओं ने इस अध्याय को सभी स्थानीय वेदियों के निषेध के रूप में पढ़ा है, लेकिन उनका कहना है कि इसका बिल्कुल भी उल्लेख नहीं किया गया है। यह स्थानीय वेदियों के बारे में बात नहीं कर रहा है; यह केवल केंद्रीय अभयारण्य की बात करता है। उनका कहना है कि व्यवस्थाविवरण क्या करता है, जब आप इसे एक पुस्तक के रूप में देखते हैं, तो दो स्तर दिखाई देते हैं: राष्ट्रीय स्तर पर, एक केंद्रीय अभयारण्य होना चाहिए; स्थानीय स्तर पर कई वेदियाँ बनाई जा सकती हैं। उनका मानना है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, अध्याय 12 में, राष्ट्रीय स्तर पर जोर दे रही है, जहां एक केंद्रीय अभयारण्य होना चाहिए।

4. व्यवस्थाविवरण 16:21; 27:5-6; 33:19 Deut में गैर-केंद्रीकृत वेदियाँ।

व्यवस्थाविवरण पुस्तक में अन्य स्थानों पर आपको इसका उल्लेख मिलता है; उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 16:21 को देखें। वेलहाउज़ेन स्कूल के लिए यह कठिन है। पद कहता है, "तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो वेदी अपने लिये बनाएगा उसके निकट किसी वृक्ष का उपवन न लगाना।" ऐसा प्रतीत नहीं होता कि यह किसी केंद्रीय अभयारण्य के बारे में बात कर रहा है; ऐसा लगता है कि यह स्थानीय वेदियों के बारे में बात कर रहा है। जब तुम देश में आओ और अपनी वेदियां बनाओ, तो कनानियों की नाईं उनके निकट वृक्ष न लगाना। व्यवस्थाविवरण 27:5-6, यह एबाल और गिरिज्जिम पर्वत के विषय में है, "वहां तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये पत्थरों की एक

वेदी बनाना।" उस पर कोई लोहे का औज़ार न उठाना।" परन्तु 27:5 और 6 में एबाल और गिरिज्जिम में तुम्हारे पास एक वेदी है; वह केंद्रीय वेदी नहीं है. और 33:19 में: "वे लोगों को पहाड़ पर बुलाएंगे; वहां वे धर्म के बलिदान चढ़ाएंगे, क्योंकि वे समुद्र की प्रचुरता और रेत में छिपे हुए खजाने पर दावत करेंगे। इसका संबंध जबूलून और उत्तर में इस्साकार के गोत्रों से है; यह वहां उनके क्षेत्र में बलिदान चढ़ाने की बात करता है। इसलिए उन्हें लगता है कि किताब इसे दो अलग-अलग स्तरों पर संबोधित करती है। राष्ट्रीय स्तर पर, एक केंद्रीय अभयारण्य है, जो व्यवस्थाविवरण 12 में है। और स्थानीय स्तर पर कई वेदियाँ हैं, जैसा कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के कुछ अन्य अंशों में देखा गया है।

5. निर्गमन में अनेक वेदियाँ

फिर वह जो कहता है वह यह है कि एक्सोडस में आपके पास समान दो स्तर हैं। राष्ट्रीय स्तर पर, आपको तम्बू, निर्गमन 25-27 के लिए प्रावधान मिलता है। यहीं पर निर्देश दिए गए हैं कि तम्बू कैसे बनाया जाना है। फिर श्लोक 36-40 में, यह वास्तव में स्थापित किया गया है, इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर आपको एक केंद्रीय अभयारण्य मिला है - तम्बू। स्थानीय स्तर पर, आपको निर्गमन 20:24-26 का वेदी नियम मिल गया है। निःसंदेह, जब आप लेविटिकस में पहुँचते हैं, तो आपके पास स्थानीय स्तर होता है; वहां सभी नुस्खे अलग-अलग समय पर लाए जाने वाले बलिदानों के लिए हैं। तो वह कहते हैं कि जब आप निर्गमन और फिर व्यवस्थाविवरण दोनों की संरचना को समझते हैं, तो वे कहते हैं कि वेलहाउज़ेन ने निर्गमन और व्यवस्थाविवरण के दो अलग-अलग स्तरों की तुलना की थी। दूसरे शब्दों में, आइए इसे इस तरह कहें: यहां निर्गमन है, और यहां व्यवस्थाविवरण है। निर्गमन 25-27, 36-40, फिर 20:24-26, इसकी तुलना व्यवस्थाविवरण 16:21, 27:5 और 6, और 33:19 से की जाएगी; ये स्थानीय है, वो राष्ट्रीय है. अब वह जो कह रहा है वह यह है कि वेलहाउज़ेन ने जो किया वह (बी) की तुलना (ए) से कर रहा है; वह दो अलग-अलग स्तर ले रहा है - एक स्तर निर्गमन में और दूसरा स्तर व्यवस्थाविवरण में - और उनकी तुलना कर रहा है। उनका कहना है कि यह समझ में आता है कि वेलहाउज़ेन एक विरोधाभास देखता है। तो वेलहाउज़ेन ने जो करने की कोशिश की वह इन दोनों चीजों को इज़राइल के ऐतिहासिक विकास

में एक अलग स्थान देना था। वह सेब की तुलना संतरे से कर रहा है। तो परिणाम यह हुआ कि (बी) को (ए) की तुलना में बहुत पुराना माना गया, और उन्होंने इस अंतर को समय में विकास के रूप में समझाया।

अब इस हालिया खंड में पोहल ने जो सुझाव दिया है वह यह है कि दोनों स्तर निर्गमन और व्यवस्थाविवरण दोनों में दिखाई देते हैं, और पंथ के विभिन्न पहलुओं से निपटने वाले नियमों की तुलना करना गलत है। यदि आप तुलना करने जा रहे हैं तो आपको एक ही चीज़ की तुलना करने की आवश्यकता है। इसकी तुलना स्थानीय के रूप में करें और इसकी तुलना राष्ट्रीय के रूप में करें, और आपको एकता मिलेगी और कोई समस्या नहीं होगी। लेकिन आप देखिए, इसमें व्यवस्थाविवरण 12 के बारे में होल्वर्डा के दृष्टिकोण में संशोधन शामिल है। अध्याय में संबोधित किए जा रहे मुद्दे को समझने के लिए, यह केंद्रीय अभयारण्य का मुद्दा है, न कि वेदियों की बहुलता का मुद्दा, और मुझे लगता है कि यह शायद बेहतर है अध्याय को देखने का तरीका.

6. वन्नॉय का पोहल और हलवर्डा का विश्लेषण

इसलिए पोहल को लगता है कि हलवर्डा का दृष्टिकोण बहुत अधिक थोपा हुआ है। मुझे लगता है कि पोहल की व्याख्या बेहतर फिट बैठती है। पोहल उस वाक्यांश के बारे में चर्चा करते हैं "वह स्थान जहां मैं अपना नाम निवास करूंगा," और महसूस करते हैं कि इसका उपयोग लगातार पूजा के केंद्रीय अभयारण्य के साथ किया जाता है। अब आप यह तर्क दे सकते हैं कि निर्गमन 20:24 भी यही बात कहता है; यह वही बात कहने के करीब आता है। लेकिन यह बिल्कुल वही शब्दांकन नहीं है। निर्गमन 20:24 कहता है, "उन सभी स्थानों में जहां मैं अपना नाम दर्ज करता हूं।" यह बहुत करीब है; यह एक समान विचार है. मुझे लगता है कि वह जो कह रहा है, वह यह है कि वेदी बनाने के स्थान का किसी प्रकार का दैवीय पदनाम होना चाहिए, लेकिन "वह स्थान जहां मैं अपना नाम निवास करता हूं" या तो तम्बू या मंदिर को संदर्भित करता है जहां सन्दूक केंद्रीय अभयारण्य था।

अब, पोहल इस पर काम करने की कोशिश करता है, और अध्याय 12 के छंद 8 में कई संदर्भ उद्धृत करता है, वह कहता है कि इसका केंद्रीय अभयारण्य से लेना-देना है, और युद्ध के

समय में इसे इधर-उधर ले जाया जा रहा है, बस कहीं भी रखा जा रहा है . यह वेदियों की बहुलता के बारे में बात नहीं कर रहा है; यह सिर्फ उस केंद्रीय अभयारण्य, उस तम्बू के बारे में बात कर रहा है।

7. उच्च स्थानों की चर्चा

मैं तुम्हारे साथ ऊंचे स्थानों पर चर्चा करना चाहता था। मुझे लगता है कि यह मुद्दा तेजी से महसूस किया जा रहा था कि इन ऊंचे स्थानों पर समन्वयवाद हो रहा है और इसीलिए अच्छे राजा ऊंचे स्थानों को मिटा रहे हैं। यह वेदियों का मुद्दा नहीं है; वेदियों पर यही हो रहा है। यह पूजा की शुद्धि है; यह पूजा का केंद्रीकरण नहीं है. और मुझे लगता है कि यह स्थापित किया जा सकता है, हमारे पास बहुत सारे ग्रंथों को देखने का समय था।

हमें उन नियमों के अनुसार पूजा करने की ज़रूरत है जो भगवान ने हमें दिए हैं। मान लीजिए कि आप साल में तीन बार प्रमुख त्योहारों के लिए केंद्रीय अभयारण्य जाते हैं। यह व्यवस्थाविवरण में है, और यह निर्गमन में भी है, वर्ष में तीन बार "तुम्हारे सभी पुरुष यहोवा परमेश्वर के सामने उपस्थित हों।" मुझे ऐसा लगता है कि, उन अवसरों पर, विशेष रूप से, केंद्रीय अभयारण्य में जाने की आवश्यकता थी। दूसरों के लिए - एक पाप बलि, एक अतिचार बलि, किसी भी अवसर पर एक भेंट की आवश्यकता हो सकती है, एक मन्नत का भुगतान करना - वह निकटतम स्थानीय अभयारण्य में जा सकता है, और आम तौर पर यही स्थिति होगी। ऐसा नहीं है कि आप मंदिर भी नहीं जा सकते थे, लेकिन आपको मंदिर जाना ही नहीं था।

लेवी चारों ओर तितर-बितर हो गये। मुझे ऐसा लगता है कि इनमें से कई स्थानीय वेदियों पर उनके पास कुछ स्थानापन्न क्षमता रही होगी, लेकिन जब वे प्रमुख त्योहारों के समय यरूशलेम गए तो वे लोगों के साथ भी गए।

ऐसे इवेंजेलिकल हैं जिन्होंने व्यवस्थाविवरण 12 की व्याख्या करते हुए कहा है कि एक वैध केंद्रीय अभयारण्य है। वे शमूएल के अंशों की व्याख्या करेंगे, ठीक है, यह मंदिर के निर्माण से पहले की बात है, या उस विश्राम से पहले की बात है जिसके बारे में द्वितीय शमूएल अध्याय 7 में बात की गई है, जब डेविड कहता है, "प्रभु ने उसे विश्राम दिया।" फिर व्यवस्थाविवरण 12 डेविड

के बाद लागू होता है, लेकिन आप देखते हैं, उस पर काम करना बेहद कठिन है क्योंकि ऐसे बहुत से संदर्भ हैं जो अभी भी उस योजना में फिट नहीं बैठते हैं।

मुझे लगता है कि वेदियाँ अक्सर ऊँची पहाड़ियों पर स्थित होती थीं। ऐसा लगता है कि कभी-कभी इस्राएलियों ने बुतपरस्त ऊँचे स्थानों पर कब्ज़ा कर लिया। यह नाजायज़ था क्योंकि उन्हें स्पष्ट रूप से ऐसा न करने के लिए कहा गया था। परन्तु वे शमूएल के समान ऊँचे टीले पर यहोवा की वेदी बना सकते थे। वह ऊँचे स्थान पर गया और ऊँचे टीले पर यहोवा को बलि चढ़ाना पूरी तरह से वैध प्रतीत होता है। मेरा मानना है कि ऊंचे स्थान में कुछ भी गलत नहीं है; ऐसा तभी हुआ है जब ऊंचे स्थानों ने समधर्मी, या बुतपरस्त पूजा की शुरुआत की, जिससे उनकी निंदा की जाने लगी।

8. 1 किलोग्राम 15:14, 1 क्रोन की तुलना। 14:3 और 2 इति 33:17

मैं आपको बस कुछ दिलचस्प सन्दर्भ देता हूँ। 1 राजा 15:14 में, राजा आसा के बारे में बोलते हुए, आपने पढ़ा, "हालाँकि उसने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया, फिर भी आसा का हृदय जीवन भर यहोवा के प्रति समर्पित रहा।" अब, 2 इतिहास 14:3 को देखें, जिसमें आसा के बारे में कहा गया है: "उसने विदेशी वेदियों और ऊंचे स्थानों को हटा दिया, पवित्र पत्थरों को तोड़ डाला, और अशेरा नाम की लाठों को काट डाला।" इसलिए राजाओं का कहना है कि उसने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया, और इतिहास कहता है कि उसने ऊँचे स्थानों में विदेशी वेदियों को हटा दिया। मुझे ऐसा लगता है कि राजाओं में आपके पास उन ऊंचे स्थानों का संदर्भ है जहां भगवान की पूजा की जाती थी: वैध ऊंचे स्थान। अब आप पूछेंगे कि इसका आधार क्या है? द्वितीय इतिहास 33:17 को देखें; यह मनश्शे के समय से है, लेकिन आप 33:17 में पढ़ते हैं, "हालांकि, लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान करते रहे, लेकिन केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिए।" मुझे ऐसा लगता है कि आपको ऊंचे स्थानों पर होने वाली पूजा के प्रकार में अंतर करना होगा। जरूरी नहीं कि यह हमेशा बुरा या गलत ही हो। और मुझे ऐसा लगता है कि जब आप आसा के इतिहास में पढ़ते हैं - उसने ऊंचे स्थानों को तोड़ दिया - और आप राजाओं में पढ़ते हैं कि उसने ऊंचे स्थानों को नहीं तोड़ा - शायद जिस तरह से आप समझाते हैं वह यह है कि उसने ऊंचे स्थानों को तोड़ दिया उन ऊँचे स्थानों के

नीचे जो बुतपरस्त पूजा में शामिल थे। परन्तु उस ने उन ऊंचे स्थानोंको छोड़ दिया जो यहोवा की उपासना के काम आते थे। मुझें नहीं पता। यह उस बारे में सिर्फ एक सुझाव है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वेदियों की बहुलता वर्जित नहीं थी, और ऊंचे स्थान का मुद्दा, भले ही यह भ्रमित करने वाला है, इसका संबंध इस बात से है कि क्या ऊंचे स्थानों पर की जाने वाली पूजा भगवान की पूजा करती थी या क्या यह समकालिक थी , बुतपरस्त पूजा।

9. होल्वर्डा सारांश: Deut. 12 एक भी वैध वेदी का समर्थन नहीं करता

ठीक है, एक और और हम रुकेंगे। होलवर्डा का कहना है कि व्यवस्थाविवरण 12 वेदियों की बहुलता के बारे में बात कर रहा है, और वह जो कह रहा है वह यह है कि अध्याय को इस तरह से नहीं पढ़ा जाना चाहिए कि यह कहा जाए कि केवल एक ही वैध वेदी है। यह वह स्थान हो सकता है जिसे यहोवा किसी भी स्थान में और तुम्हारे किसी गोत्र में चुनता है। जब तक वे निर्गमन 20 के अनुसार बनाए जाने के नियमों का पालन करते हैं, तब तक कई वेदियां हो सकती हैं और स्थान मनमाने ढंग से पसंद का नहीं है, बल्कि प्रभु द्वारा इंगित किया गया है। उन नियमों का पालन करने पर उतनी वेदियाँ हो सकती हैं।

10. पोहल देउत. 12 राष्ट्रीय अभयारण्य; स्थानीय अनेक वेदियाँ

अब पोहल का कहना है कि अध्याय वेदियों की बहुलता के बारे में बात नहीं कर रहा है, यह केंद्रीय अभयारण्य के स्थान के बारे में बात कर रहा है। उनका कहना है कि यह वेदियों की बहुलता के मुद्दे का भी समाधान नहीं करता है। यह केवल राष्ट्रीय स्तर, केंद्रीय अभयारण्य के बारे में बात कर रहा है, और यह जो कह रहा है वह यह है कि, जब आप कनान देश में आते हैं, तो वह स्थान जहां मैं अपना नाम निवास करता हूं, आपके जनजातियों में से एक में वह स्थान होने जा रहा है वह केंद्रीय अभयारण्य स्थित होना है। और इसलिए आप उस सामग्री की तुलना नहीं कर सकते जो एक केंद्रीय अभयारण्य के मुद्दे को निर्गमन की सामग्री से संबोधित कर रही है जिसका स्थानीय स्थिति और बलिदान के स्थानों से संबंध है। वे बलिदान के वैध स्थान भी थे। आप इस राष्ट्रीय स्तर

की तुलना इस स्थानीय स्तर से कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष की स्थिति पैदा हो रही है। दोनों पुस्तकें दोनों स्थितियों को संबोधित करती हैं। निर्गमन तम्बू पर अपनी सामग्री के साथ राष्ट्रीय स्थिति को संबोधित करता है और निश्चित रूप से, लेविटिकस, फसह और विभिन्न पर्वों और त्योहारों पर अपनी कुछ सामग्री के साथ, और प्रायश्चित का दिन राष्ट्रीय स्तर पर है। स्थानीय स्तर पर वेदी कानून है. तो आपके पास दोनों पुस्तकों में दोनों स्तर हैं, और संघर्ष की उपस्थिति इसे न समझने का परिणाम है। ठीक है, चलो रुकें।

हेले पोमेरॉय द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया